दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL10**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): अनिल कुमार यादव

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): ____________________

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]: ____________________

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature): ____________________

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 140

टिप्पणी (Remarks): उत्तम

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजियेः $10 \times 5 = 50$

(क) विरहा बुरहा जिनि कहौ, बिरहा है सुलितान।
जिस घटि बिरह न संचरै, सो घट सदा मसान।।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत दोहा श्यामसुन्दर दास द्वारा संकलित 'कबीर ग्रन्थावली' के 'विरह को अंग' से लिया गया है। इसके रचयिता कबीर दास जी हैं।

प्रसंग एवं व्याख्या:- कबीरदास जी विरह के महत्त्व को उक्त दोहे में उद्घाटित किया है।

कबीर दास जी कहते हैं कि विरह को अनावश्यक व कष्टदायक नहीं मानना चाहिए वह प्रेम का सत्य है। जिस मनुष्य में विरह का संचार नहीं होता है वह मनुष्य मरनस्थल के समान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावगत विशेषताएँ :-

① कबीर ने विरह के महत्त्व को स्थापित किया है। महादेवी वर्मा भी कहती हैं — " विरह का तुम नाम न लो, मैं विरह में चिर हूँ"

② कबीर द्वारा, विरह को व्यक्ति की संवेदना का मूल बताया गया। संवेदनशील व्यक्ति की पहचान उसकी विरह की अनुभूति से की जा सकती है।

③ सत-चित-वेदना का महत्त्व उद्घाटित

शिल्पगत सौन्दर्य :-

① छन्द - दोहा ।
② भाषा - सधुक्कड़ी ।
③ शब्दावली - पंचमेल ।
④ अलंकार - उपमा - "रवो" ।
⑤ प्रतीक भाषा - संध्या भाषा ।

Good

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) तंत्रीनाद, कवित्त-रस, सरस राग, रति-रंग।
अनबूड़े बूड़े, तिरे जे बूड़े सब अंग।।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारी के 'बिहारी सतसई' से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या:- प्रस्तुत दोहा में कवि बिहारी कविता की उपयोगिता बताने का प्रयास किये है।
कवि बिहारी ने कविता को सरस राग और रति पूर्ण है वह लोगों में आनन्द का संचार करने का माध्यम है जो इसमें डूब जाता है वह ही इसमें तकड़ा चला है।

भावगत सौन्दर्य:-
① कविता की उपयोगिता तथा ~~महत्व~~ महत्त्व लोगों को अपने में डुबा कर आनन्द प्रदान करने में

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है। यह कविता की सामाजिक दायित्वों से मुक्त करती है जो बिहारी का आलोचना का आधार है

(2) कविता में बिहारी की शृंगार-प्रियता- देह मूलक शृंगार तथा दरबारी संस्कृति के प्रति उनकी सोच को दिखाता है।

(3) कविता केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं है। आचार्य शुक्ल इसके साधनावस्था तथा रस की लोकमंगल वादी व्याख्या द्वारा सिद्ध करते

शिल्पगत सौन्दर्य:-

(i) काव्य रूप - दोहा छन्द
(ii) भाषा - ब्रज भाषा की कोमलता
(iii) प्रतीकात्मक भाषा -
(iv) अलंकार - विरोधाभास, तथा उपमा अलंकार।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ निर्गुण काव्य धारा प्रतिनिधि कवि जायसी की 'पदमावत' के 'नागमती वियोग' खण्ड से हैं। जिसका संपादन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किया है।

प्रसंग व व्याख्या:- रत्नसेन के सिंहल द्विप चले जाने पर नागमती का वियोग दिखाया गया है।

रत्नसेन परदेश है, नागमती उनके विरह में है भादों बरसात का महिना है। वह जीते से रही है लग रहा बादल बरस रहे है। सेज पर नाग लग रहा हो एक पाटी पकड़ कर सोने का प्रयास करती है परन्तु फिर भी उनका हृदय विरह से फटा जा रहा है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्यगत सौन्दर्य :-

① विरह वियोग का अद्वितीय वर्णन। आचार्य शुक्ल ने इसकी गार्हस्थ्य चेतना के कारण इसे अद्वितीय कहा है।

② नागमती का 'रानीपन' यहाँ नहीं दिखाई पड़ रहा। बल्कि एक सामान्य 'नारीपन' का भाव है।

③ कथा काव्य में - बारहमासा वर्णन को आधार बनाया गया है।

④ हिन्दी मासों - भादों तथा असाढ़ - पुरवा का कलात्मक सजीव वर्णन

⑤ ब्रजभाषा की तरह ही अवधी भाषा में व्याप्त कोमलता व औदात्य को पढ़ने का प्रयास

⑥ प्राकृतिक वस्तुओं वियोग की दशा से भावों का आरोपण।

⑦ चित्रयोजना

⑧ अलंकार - उपमा तथा रूपक।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) बिन गोपाल बैरिन भईं कुंजैं।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भईं विषम ज्वाल की पुंजैं।।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।
पवन पानि घनसार सँजीवनि, दधिसुत किरन भानु भइं भुंजैं।।
ए, ऊधो, कहियो माधव सों, बिरह कदन करि मारत लुंजैं।
सूरदास प्रभु को मग जोवत, अँखियाँ भईं बरन ज्यों गुंजैं।।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्ति सगुण भक्ति कृष्णकाव्य धारा के प्रतिनिधि कवि सूरदास के पद - 'सूर ग्रंथावली' से ली गयी है जिसके सम्पादक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी है।

प्रसंग व व्याख्या :-

कृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियां अत्यन्त दुखी है उद्धव के माध्यम से कृष्ण को अपनी व्यथा बताने को कहती है। कि बिना कृष्ण के यह वन उनका बैरी हो गया है। पहले इस वन - वनान्तर की प्रत्येक वस्तु उन्हें प्रिय थी - लता, कमल यमुना का पानी। लेकिन अब सबने ज्वाला को ऐ तब उनके वियोग को बढा रही है। वे आज भी कृष्ण का इंतजार कर रही है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावगत सौन्दर्य :-

① गोपियों का विरह हिन्दी साहित्य में अद्वितीय है। यह कबीर के विरह व नागमती के विरह की तरह उच्च कोटि का है।

② विरह का वर्णन स्वाभाविक है। प्रकृति का यहाँ आलम्बन व उद्दीपन विभाव के रूप में चित्रण हुआ।

③ सूरदास की सगुण-निर्गुण चेतना ज्यादा उनके प्राकृतिक व ग्रामीण चेतना का उद्घाटन है ऐसा मैनेजर पाण्डेय का मानना है।

शिल्पगत सौन्दर्य :-

① काव्यरूप - लीला पद

② ब्रजभाषा ध्वन्यात्मकता, लयात्मकता व कोमलता विद्यमान है

③ बिम्बविधान अत्यन्त सघन है दृश्य, ध्वनि आदि बिम्बों का प्रयोग

④ अलंकारों के बादशाह हैं ऐसा शुक्ल जी मानते हैं

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) मेरे जाति-पाँति, न चहौं काहू की जाति-पाँति,
मेरे कोऊ काम को, न हौं काहूँ के काम को।
लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब,
भारी है भरोसो 'तुलसी' के एक नाम को।
अति ही अयाने उपखानो नहिं बूझैं लोग,
'साह ही को गोत गोत होत हैं गुलाम को'
साधु कै असाधु कै भलो कै पोच, सोज कहा,
का काहू के द्वार परौं? जो हौं सो हौं राम को।।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्ति काल के सगुण भक्ति काव्य के रामाश्रयी शाखा के प्रतीनिधि कवि तुलसी दास की कवितावली से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या:- यहाँ तुलसी की भक्ति भावना का उद्घाटन है। वे स्पष्ट कहते है कि भक्ति में जाती-पात ऊँच नीच नहीं चलता है उन्हें इससे मतलब नहीं है। वे जो कुछ भी हैं उसी राम के हैं। और वो सबके हैं। वे अपने योगदान को नहीं मानते है। वे गुलामों तक को भी भक्ति व राम का आधार प्रदान करते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

काव्यगत सौन्दर्य :

① "तुलसी साहित्य में सामंतवाद विरोधी मूल्यों" की पहचान यहाँ की जा सकती है। वे जाति-पाति की; मूलाव व्यवस्था के विरोधी है।

② कबीर की तरह ऊँच नीच तथा छोटे बड़े सबको भक्ति की समान भूमि प्रदान करते हैं।

③ भक्ति के महत्त्व को स्थापित करते हैं।

④ 'राम नाम' को मनुष्य के लोक परलोक को सुधारने वाला मानते हैं।

⑤ भाषा अत्यन्त सरल प्रवाह मयी

⑥ भाषा में व्यंग्य की धारदारी

⑧ अलंकार में - उपमा "सो" तथा रूपक का प्रयोग।

⑨ तुकों का भी प्रयोग।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) कबीर के काव्य में निहित रहस्यवाद के प्रेममूलक, साधनामूलक एवं अभिव्यक्तिमूलक रूप पर प्रकाश डालिये। 20

कबीर, हिन्दी साहित्य के सबसे विवादित और मर्यादित कवियों में से हैं। जहाँ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना उन्हे विवादों के बीच खड़ा करती है तो वहीं आचार्य द्विवेदी उन्हे मर्यादाओं के शिखर प्रदान करते हैं। इन दोनों का मूलाधार उनकी कविता में निहित 'रहस्यवाद' है। जैसे कोई भावनात्मक रहस्यवाद कोई साधनात्मक रहस्यवाद पेड़ता है उनकी अभिव्यक्ति में अपनी स्वयं भाषा नामक उलटबांसी से आते हैं। इसलिए इसका विवेचन आवश्यक हो जाता है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कबीर की प्रगति शीलता की प्रशंसा की परन्तु उस व्यक्ति रहस्यवाद और प्रतीकात्मकता की आलोचना की क्योंकि इससे काव्य में अप्रतीत दोष उत्पन्न हो जाता है। इन्होंने उनमें निहित प्रेम व साधना को हठयोग/पर बाधित किया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन्हें पहचाना। और महत्त्व को स्थापित करते हुए उसमें प्रेममूलक रहस्यवाद को जायसी से जोड़ने के साथ ही उसे भारतीय परम्परा से जोड़ दिया।

कबीर काव्य में रहस्यवाद एक पक्ष प्रेममूलक है। जब वे गहन स्नेह की अनुभूति में होते हैं तो उनका ईश्वर अर्थात स्रष्टा के प्रति प्रेम 'रहस्यवाद' का रूप ले लेता है।

" जो बिछुरे हैं पिया रे से भटकते दर बदर फिरते "

"अकथ कहानी प्रेम की" में पुरुषोत्तम अग्रवाल ने ही स्थापना की है।

कबीर में रहस्यवाद का एक उनके योग परम्परा में दीक्षित होने में भी है कबीर पर हठयोग का प्रभाव है। आचार्य द्विवेदी कबीर की अक्खड़ता के पीछे नाथ परम्परा का ही प्रभाव बताते हैं। यही कारण है कि कबीर काव्य में साधनात्मक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

रहस्यवाद के तत्व दिखाई पड़ते हैं। "देखो नदियाँ बीच नइया डूबत जाए"

कबीर के रहस्यात्मक प्रेम अनुभूति जो भी निर्गुण ब्रह्म की उपासना पद्धति के कारण है वहीं साधनात्मक रहस्यवाद केवल हठयोग का प्रभाव है। जब वे इस की अभिव्यक्ति करते हैं तो भाषा में प्रतीकात्मकता आ जाती है इस प्रकार उनकी अभिव्यक्ति भी रहस्यवादी प्रतीत होती है जैसे 'संधाभाषा' भाषा कहा जाता है। जो नाथ पंथी उलट वाली है

"कहै कबीर की उलटी बानी बरसै कम्बल भीजै पानी"

इस प्रकार कबीर काव्य में प्रेममूलक व साधनामूलक रहस्यवाद उपस्थित है जो अपनी अभिव्यक्ति में रहस्यवाद अभिव्यक्ति भी धारित करता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

है लेकिन आचार्य द्विवेदी उन्हें "वाणी का डिक्टेटर" घोषित करते हैं। वह रहस्यवाद, कबीर काव्य का एक सीमित अंश ही है एकमात्र अंश नहीं है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सूरदास की साहित्यिक निपुणता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वैसे तो सूर दास को पुष्टिमार्ग का जहाज कहा जाता है परन्तु सूरदास न केवल अपने वात्सल्य वर्णन बल्कि अपने 'भ्रमर गीत' के कारण भी हिन्दी साहित्य में अद्वितीय स्थान रखते हैं। भाव तथा शिल्प, रचना तथा शैली प्रत्येक स्तर उनकी साहित्यिक निपुणता को देखा जा सकता है।

सूरदास का वात्सल्य वर्णन न केवल हिन्दी साहित्य परम्परा बल्कि विश्व की किसी भी साहित्यिक परम्परा में विशेष है। यह विशिष्टता उनके बाल-मनोविज्ञान पकड़ने की उनकी निपुणता से है। छोटे भावों को पकड़ना तथा उसको अपनी तराशी भाषा से अभिव्यक्ति करने की निपुणता महाकवि सूर दास में है।

"घुटरुन चलाते रेनु तनमंडित, मुख दधि लेप किये"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इतना ही भ्रमर-गीत परम्परा में सूरदास ने मौलिक योगदान दिया जो उनकी निपुणता को दिखाता है। गोपी-उद्धव संवाद में उनकी भाव भेगिमा वक्रता तथा निर्गुण पर व्यंग्य उन निपुणता को दिखाते है। गोपियाँ खुद को अनपढ़ गवार कहकर, उद्धव को ज्ञानी कह कर उन्हें निरुत्तर कर देती है।

"मधुकर हाँकि समुझाय,
पुछों सौंच न हाँसी"
"निरगुन कौन देश के वासी"।

गोपियों की निपुणता अन्ततः सूरदास की निपुणता है।

सूरदास ने अपनी निपुणता से काव्य के पदों में चरावाहा संस्कृति, महिला सम्मान का जो चित्र अंकित किया है मैनेजर पाण्डेय जैसे आलोचक इसे उनकी स्थाई कीर्ति का आधार मानते है। वे समाज तथा राजनीति को भी अपनी साहित्यिक निपुणता से साध लेते है।

काव्यगत विशेषताएँ गायब

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) आपके मत से कबीर और तुलसी में किसे 'लोकनायक' की संज्ञा देना अधिक उचित होगा? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भारतीय राजनीति में 'लोकनायक' के रूप में जयप्रकाश नारायण को माना जाता है परन्तु हिन्दी में 'लोकनायक' की संज्ञा पर कबीर और तुलसी का दावा अलग-अलग आलोचक सिद्ध करना चाहते हैं। इस सन्दर्भ में लोकनायक किसे माना जाए यह विवाद का विषय है। इसके वस्तुनिष्ठ मानक तय किये जा सकते हैं जिनके आधार उन्हें लोकनायक माना जाए।

लोकनायक की सबसे बड़ी कसौटी उसकी लोक में उपस्थिति होती है उसकी लोक प्रतिबद्धता होती है इस दृष्टि से देखें तो तुलसी तथा कबीर दोनों ने ही लोक के प्रश्नों को उठाया है। कबीर जहाँ ऊँच नीच, सामाजिक छुआछूत, साम्प्रदायिक तनाव, बाह्य आडम्बरों पर चोट करते हैं वहीं तुलसी ज्ञान के साहित्य में सामंतवाद

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विरोधी मूल्य हैं। तुलसी बेरोजगारी, गरीबी, बाह्य आडम्बर पर भी बहुत लिखे हैं। इसीलिए डॉ रामविलास शर्मा ने माना है कि तुलसी ने गरीबी पर जितना अकेले लिखा उतना आधुनिक युग सभी कवि मिलकर नहीं लिख सके हैं।

कबीर और तुलसी को लोकनायक के लिए उनकी स्वीकृत तथा प्रासंगिकता के आधार पर भी लोकनायक का निर्धारण किया जाना चाहिए। इस आधार पर भी दोनों कवियों में समानता दिखाई देता पड़ती है।

कबीर की वाणी आज भी गाई जाती है उनके निर्गुण का आज भी पाठ होता है उनको प्रथम आधुनिक कवि माना जाता है तो तुलसी दास जी का रामचरित मानस भी धर्मग्रन्थ बन गया उसका उसी तरह पाठ किया जाता है। इस आधार पर भी दोनो कवियों में समता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नारी को लेकर कबीर तथा तुलसी दोनों पर पूर्वाग्रह का आरोप लगता है। वास्तव में उनकी सीमा नहीं उस युग की सीमा है।

निष्कर्ष में कहा जा सकता है कबीर तथा तुलसी दोनों ही लोकनायक हैं। उनमें किसी एक साथ वह संज्ञा लगा देना उनके महत्त्व भले न बढ़ाये दूसरे के महत्त्व कम अवश्य कर देगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'असाध्य वीणा' पर अस्तित्ववाद तथा जेन बौद्धमत का प्रभाव कहाँ तक दिखाई देता है? विवेचन कीजिये। 20

'असाध्य वीणा' अज्ञेय की प्रतिनिधि कविता है। कविता तथा कथा साहित्य दोनों काव्य रूपों पर अज्ञेय में अस्तित्ववाद का प्रभाव तथा बौद्ध धर्म के जापानी शाखा जेन बौद्धमत का प्रभाव दिखाई पड़ता है। अतः इस प्रतिनिधि कविता में भी इन दोनों दार्शनिक प्रभावों की जाँच की जानी चाहिए।

अज्ञेय पर अस्तित्ववाद का गहरा प्रभाव है। यह प्रभाव उनकी कहानियों तथा उपन्यासों 'अपने-अपने अजनबी' तथा कविताओं में दिखाई पड़ता है। वह प्रभाव 'असाध्य वीणा' में व्यक्त हुआ। अस्तित्ववाद में 'क्षण' का बहुत महत्व है। वह

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भाव 'असाध्य वीणा' कविता की रचना में निहित है।

'वीणा' का बजना होना, विद्रोह में घटित होता है, यह अस्तित्ववाद का प्रभाव है।

अस्तित्ववाद का इसका प्रभाव वीणा के बजने पर सुनाई देने वाले स्वर में है क्योंकि 'स्व' के अनुसार ही वीणा का स्वर सुनाई देता है। अस्तित्ववाद की मूल भावना है कि मनुष्य को अपने 'स्व' का ज्ञान होना चाहिए तथा उसी के अनुसार जीवन जीना ही 'प्रामाणिक' जीवन है।

इसके अलावा 'असाध्य वीणा' पर सबसे अधिक प्रभाव जेन बौद्धमत का है। कथा आधार ही जापानी है। इसी से इस प्रभाव की पुष्टि होती है। जेन बौद्धमत के अनुसार मनुष्य की सार्थकता उसके अहम् अर्थात अहंकार के विसर्जन में है। और इसी सहजता समता की उत्पत्ति होती है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

' केश कम्बली गुफा गेह." ने सौंप दिया था बुद्ध को वीणा को और "वीणा ने अपने से अपने को गा" था। यह भाव जैन मत से प्रभावित है।

" वह शब्द मौन
जो स्वयं गाता है" यह भाव भी जैन मत प्रेरित है। जैन बौद्ध मत के अनुसार ब्रह्म है व निराकार परन्तु सब में मौजूद है। यही भाव कविता में भी है इस प्रकार अज्ञेय बौद्ध धर्म की जेन शाखा का प्रभाव यहाँ भी।

इसके अलावा 'असाध्य वीणा' में अद्वैत वेदांती प्रभाव भी है। T.S. इलियट का वस्तुपरक एवं निर्वैयक्तिकता का प्रभाव भी है। परन्तु सर्वाधिक प्रभाव जेन बौद्ध मत का है। इसमें अस्तित्ववादी दर्शन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कां. ने अंग्रेज ने छला

दिया थी

1.2/20

Good

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) 'राम की शक्तिपूजा' में विभिन्न स्तरों पर समायोजित द्वंद्वात्मकता की पहचान कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'राम की शक्तिपूजा' निराला की प्रगीतात्मक लम्बी कविता है जो महाकाव्यात्मक औदात्य से परिपूर्ण है, परन्तु इसमें नाटकीयता का चरम द्वन्द्व भी है। यह द्वन्द्व कविता में विभिन्न स्तरों पर समाहित है। इसकी पहचान की जा सकती है।

द्वन्द्वात्मकता नाटक की प्रमुख विशेषता है परन्तु महान व योग्य कवि कविता में भी द्वन्द्वात्मकता का सृजन कर देते हैं। इस दृष्टि से निराला व मुक्तिबोध सबसे सक्षम हैं।

निराला की शक्तिपूजा में कथानक के स्तर पर, भावों के स्तर पर, बिम्बों के स्तर पर तथा अभिव्यक्ति शैली तीनों पर ही द्वन्द्वात्मकता है। कथानक में इतना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चढ़ाव है। "रूप हुआ शान्त" से कविता शुरू होती है। कभी राम राम को निश्चय तो कभी जीत की भावना तो हनुमान का उपर उठना, साधु निका का शान्त माहौल, वृद्ध का नेतृत्व, राम की पूजा, फूल की चोरी और राम के मुख में शक्ति विलय पूरा कथानक द्वंद से भरा है।

भावों के स्तर पर भी द्वंदात्मकता है। "स्थिर राघवेन्द्र का हिला रहा फिर-फिर संशय"। शक्ति को रावण के पक्ष में देखना डर व संशय का भाव 'फिर सीता की का "नयनों से नयनों का प्रिय गोपन संभाषण" तथा "लतान्तराल मिलन" सुकुमार भावों का द्वंद है।

राम की स्थिरता तथा हनुमान की उग्रता का भाव है। पर भी द्वंद की अभिव्यक्ति है।

इतना ही नहीं द्वंद का स्तर - अंधेरा और उजाला भी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भी है। "को रहा देखा मा-
नाम, स्तब्ध हैं पवन चार"
** वन जलती मशाल "
कविता में विराट बिम्ब
पिद्द गरजता आवृधि विद्राल
है" तो "कवि माये दृष्टि में
राम गय जीता नयन" में
सुकुमार बिम्ब भी है।
भाषा भी एक तत्सम
प्रधान है। पंक्ति तो सरल
भाषा भी है।
इस प्रकार कविता में
द्वन्द्वात्मकता, कथानक, भाव,
बिम्ब, भाषा, और तत्वों पर

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पद्मावत अन्योक्ति है या समासोक्ति? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जब कोई कथा किसी मधकीप अथवा ऐतिहासिक कथानक को आधार बनाकर लिखी जाती है तो उन पर यह प्रश्न उठता है कि वह अन्योक्ति या समासोक्ति है। यही प्रश्न 'पद्मावत' के सन्दर्भ में भी उठता है।

"गुरु सुआ जेहिं पंथ दिखावा।
बिन गुरु ज्ञात ते निगुन पाया"

इन्ही पंक्तियों से इसे अन्योक्ति कहा जाता है। इसमें शैतान के रूप में अला उद्दीन को कहा गया है जबकि रत्नसेन को आत्मा तथा पद्मावती को ब्रह्मा के रूप में माना गया है।

परन्तु इस आधार पर पद्मावत को अन्योक्ति नहीं

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कहा जा सकता है ये चौपाइयाँ क्षेपक प्रतीत होती हैं।
जायसी कहते हैं - कि -
जोड़ी लाई रकत कै लेई, "जो पढ़ेगा वही प्रेम का पायेगा।
जायसी की रचना का मूल कारण प्रेमाख्यान लिखना है। 'प्रेम की पीर" को लोगों तक पहुँचाना है। नागमती के माध्यम से मार्मिक प्रेम को दिखाना है।

पद्मावत को पढ़कर भले ही एक अन्य अर्थ की उत्पत्ति होती हो परन्तु उसे एक समासोक्ति ही माना जाना चाहिए। जायसी प्रेम के कवि हैं। पद्मावत को उसी रूप में लिया जाना चाहिए यद्यपि किसी को इसमें भावनात्मक रहस्यवाद दिखाई पड़ सकता है।

7½/15

प्रमुख आलोचकों के मतों का भी उल्लेख करें।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) कौन कहता है, जीवन-संग्राम में वह हारा है। यह उल्लास, यह गर्व, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं? इन्हीं हारों में उसकी विजय है। उसके टूटे-फूटे अस्त्र उसकी विजय-पताकाएं हैं। उसकी छाती फूल उठी है, मुख पर तेज आ गया है।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पंक्ति प्रेमचन्द के उपन्यास 'गोदान' से है अपनी जातीय मृत्यु पर होरी सोच रहा है।

व्याख्या:- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक कह रहा है कि जीवन एक संग्राम है। जीवन में हार जीत केवल इससे तय नहीं होती है कि उससे प्राप्त क्या हुआ, बल्कि उन प्रयोजनों से जिसके लिए वह लड़ा। नायक को गर्व है कि उसने अच्छे व नैतिक कारण से लड़ा है इसके शस्त्र-अस्त्र का टूटना इसका प्रमाण है कि वह लड़कर हारा है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचनात्मक सौन्दर्य:-

① कहू की नैतिक व उसके परिणाम के बीच का सम्बन्ध दिखाया गया है।

② कहू में हार का जीवन संग्राम में हार उसकी हार में ही बल्कि उसमें भाग लेकर उसमें अपना योगदान देकर उसमें शामिल होने में है

③ जीवन तथा कहू में हार नहीं मानने का संदेश

④ भाषा तत्समी प्रधान

⑤ लोक मुहावरा - 'छाती फूलना'

⑥ संवाद शैली - सुगठित।

⑦ प्रेमचन्द ने होरी के माध्यम से उदात्त नायक की परिभाषा बदल दी है।

5/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) विद्यापति की चर्चा होते ही कविवर 'दिनकर' का एक प्रश्न बरबस सामने आकर खड़ा हो जाता था– "विद्यापति कवि के गान कहाँ?" बहुत दिनों बाद मन में उलझे हुए उस प्रश्न का जवाब दिया– ज़िंदगी-भर बेगारी खटनेवाले, अपढ़ गँवार और अर्धनग्नों में, कवि! तुम्हारे विद्यापति के गान हमारी टूटी झोंपड़ियों में ज़िंदगी के मधुरस बरसा रहे हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ: प्रस्तुत गद्यांश कणीश्वरनाथ 'रेणु' के कृतिनिधि आँचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' से लिया गया है।

प्रसंग व व्याख्या :- रेणु ने मैथिली कवि विद्यापति की प्रशंसा में दिनकर द्वारा की गयी प्रशंसा के माध्यम से विद्यापति की प्रासंगिकता की तलाश करते हैं।

विद्यापति के गीत, गरीब, पिछड़े तथा जीवन में आधुनिक सुख सुविधा से दूर रहने वाले वर्ग के हृदय में रस का संचार

[illegible]

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

करते हैं। इनके मन में प्रेम और संघर्ष की बीज जागते हैं।

रचनात्मक सौन्दर्य:-

① रेणु दिनकर के माध्यम से विद्यापति के गीतों की प्रासंगिकता की चर्चा करते हैं।

② रेणु ने मैथिली कोकिल के माध्यम से गरीब व पिछड़ों के जीवन रस को पहुँचाना है।

③ उक्त गद्यांश रेणु की जन पक्षधरता को दिखाता है।

④ भाषा में आँचलिकता का तत्व नहीं क्योंकि दिनकर का उद्धरण है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) युद्ध क्या गान नहीं है? रूद्र का शृंगीनाद, भैरवी का तांडव-नृत्य और शस्त्रों का वाद्य मिलकर भैरव संगीत की सृष्टि होती है। ध्वंसमयी महामाया-प्रकृति का वह निरंतर संगीत है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियां जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कन्दगुप्त' से ली गयी है।

प्रसंग- देवसेना द्वारा युद्ध के बारे में अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या!- देवसेना कहती है कि युद्ध किसी गाना या किसी योद्धा से कम नहीं है। यह उल्लास का विषय है। वह कहती है कि शिव जी का ताण्डव नृत्य, भैरव संगीत यह सब तो विनाश व युद्ध के साथ संगीत मे को ही व्यक्त करते है प्रकृति भी उत्थान-पतन से संगीत को सृजन करती है।

प्रसंग

सुधार

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

रचनात्मक सौन्दर्य :-

① युद्ध के प्रति रोमानियत भरा भाव / बनाई शा जैसे लेखक 'Arms And The Men" में इस दृष्टिकोण को बालिक करते है।

② प्रसाद की राष्ट्रवादी दृष्टि का द्योतक / तत्कालीन स्वतंत्रता संघर्ष के लिए प्रासंगिक दृष्टि

③ गाँधी जी और ताल्सताय (युद्ध और शांति) के विचार जैसा नहीं है

④ भावा तरलमी /

⑤ छायावादी नारी दृष्टि

⑥ लोक मिथक का प्रयोग - शिव ताण्डव

⑦ परिवर्तन में विश्वास/

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्व है। कभी एक क्षण के लिए भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिए व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से लिया गया है।

प्रसंग:- प्रस्तुत गद्यांश में प्रियंगुमंजरी मल्लिका से कालिदास के लिये राजनीति जागरूकता की आवश्यकता बता रही है।

व्याख्या:- राजनीति को साहित्य से पृथक करते हुए कहती है कि राजनीति में जागरूक व्यक्ति की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि वहाँ सदैव दाव-पेंच चलते रहते हैं जरा भी चूक जाने पर भारी अनिष्ट हो सकता है। वहाँ प्रत्येक क्षण का महत्व है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रचनात्मक नोट्स:-

① राजनीति और साहित्य के आपसी विरोध को दिखाया गया है।

② ~~अस्तित्व~~ अस्तित्ववाद का प्रभाव - " एक-एक क्षण का महत्व " क्योंकि अस्तित्ववाद में क्षण का बहुत महत्व होता है।

③ राजनीति की दाव-पेंच को तथा उसके लिए जागरूकता की आवश्यकता को दिखाया गया।

④ ~~उक्त पंक्तियों की पुष्टि कालिदास नाटक के अन्त में कहता है - " वह क्षेत्र मेरे योग्य नहीं था"~~

⑤ भाषा - प्रसंगानुसार व पात्रानुसार

⑥ वाक्य छोटे-छोटे।

⑦ संवाद-योजना - चुस्त

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) बच्चों की शक्लें और शरारतें तो बहुत पहचानी सी लगती हैं पर गोलगप्पे खाती हुई उनकी मम्मी अजनबी है, क्योंकि उसकी आँखों में मासूमियत और गरिमा से भरा प्यार नहीं है। उसके शरीर में मातृत्व का सौंदर्य और दर्प भी नहीं है। उसमें सिर्फ एक खुमार है और एक बहुत बेमानी और पिटी हुई ललकार है; जिसे न तो नकारा जा सकता है और न स्वीकार किया जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ:-

व्याख्या:- रचना कहता है कि बच्चों को तो नायक पहचाता है उनकी शक्लों व शरारतों से उनकी मां में अब वह मासूमियत व गरिमा नही। शरीर में मातृत्व भी नहीं रहा अब। उसमें ऐसा कुछ नही जो आकर्षित करता हो लेकिन उत्तेजित करने वाली ललकार अवश्य है। इसे न स्वीकार किया जा सकता है न ही छोड़ा जा सकता है।

(सोर्न्दर्य उद्धरण कालेशर)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचनात्मक सौन्दर्य!-

① मासूमियत, प्रेम, मातृत्व आदि की पहचान को स्थापित किया गया है।

② शहरी मध्यवर्गीय अजनबीपन, सम्बन्धहीनता को दिखाया गया।

③ आधुनिक जीवन शैली में व्याप्त होते खालीपन तथा उत्तेजित करने वाले सौन्दर्य की आलोचना

④ भाषा सरल व प्रभावकारी

⑤ नई कहानी की विशेषताओं से युक्त शैली।

3/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'श्रद्धा-भक्ति' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की निबंध-शैली की विशिष्टताओं का उद्घाटन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'श्रद्धा-भक्ति' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल प्रमुख मनोविकार वादी उपन्यास है। 'चिन्तामणि' निबन्ध संग्रह में संकलित है। यह निबन्ध आचार्य की निबन्ध शैली की विशिष्टताओं का प्रतिनिधित्व करता है। इसी कारण इसका अध्ययन व इन विशिष्टताओं की पहचान और आवश्यक हो जाती है

आचार्य शुक्ल की संवेदना निबन्ध में प्रायः मनोविकार वादी ही रही है इसी से उनकी शैली का विकास हुआ। "श्रद्धा-भक्ति" से पूर्व ही शुक्ल जी मानते है कि—

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कविता की कसौटी गद्य है, और गद्य की कसौटी निबन्ध होते हैं, तथा निबन्ध की कसौटी विचारपरक निबन्ध होते हैं। ऐसा लगता है "श्रद्धा तथा भक्ति" में आचार्य शुक्ल प्रान शैली को प्रतिनिधित्व दे रहे हैं।

श्रद्धा भक्ति में सूत्र शैली का प्रयोग हुआ -

" श्रद्धा और प्रेम का योग भक्ति है"

यह शुक्ल जी की विशिष्टता है वे पहले किसी चीज को एक वाक्य में परिभाषित करते हैं फिर उसकी व्याख्या करते हैं।

श्रद्धा-भक्ति में शुक्ल जी की निबन्ध शैली की विशेषता में उनकी वैज्ञानिक, तर्कवादी निगमनात्मक शैली है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वे कम से कम शब्द में
अपनी बात कहते हैं। फिर
इसका कार्य-कारण आधार
पर विश्लेषण और
व्याख्या करते हैं।

शुक्ल जी की एक
और विशेषता है कि वे
हास्य और व्यंग्य का
भी प्रयोग करते हैं। वे
जब लिखते हैं कि श्रद्धा
का दुरुपयोग किस प्रकार
किया जा सकता है तो वे
इसी का प्रयोग करते हैं।

उदाहरण देने के प्रसंग में
उनकी निबन्ध शैली में
"मैं" शैली का भी प्रयोग
श्रद्धा और भक्ति में हुआ है।

उनकी निबन्ध शैली की
एक अन्य विशेषता भी
श्रद्धा और भक्ति निबन्ध में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

है कि वे प्रसंगानुसार उदाहरण देकर अपनी बात भी कहते चले हैं।

इस प्रकार 'श्रद्धा-भक्ति' निबन्ध आचार्य शुक्ल की निबन्ध शैली की विशेषताओं का प्रतिनिधि निबन्ध है।

11½/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) कुछ आलोचकों की राय है कि गोदान में व्यक्त होने वाला यथार्थवाद मार्क्सवाद से प्रेरित समाजवादी यथार्थवाद है। आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? युक्तियुक्त विवेचन कीजिये। 15

मुंशी प्रेमचन्द अपनी उपन्यास यात्रा आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद से करते हैं परन्तु 1936 आते-आते उनके ऊपर आदर्शवाद का प्रभाव खत्म हो जाता है वे यथार्थवाद के धरातल पर आ खड़े होते हैं। गोदान उनके यथार्थवाद का प्रतिनिधि उपन्यास है। कुछ आलोचकों द्वारा इसे मार्क्स प्रेरित समाजवादी यथार्थवाद कहा जाता है जितनी पहचान की जानी चाहिए।

'गोदान' उपन्यास में यथार्थ का तत्व नग्न रूप में उभर कर आया है। इसमें सामंतवाद के पतन के संकेत भी हैं तो पूंजीवादी व्यवस्था के उभार के संकेत भी हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

किसानों की ऋणग्रस्तता, विधवा विवाह, दहेज समस्या, जमींदार द्वारा शोषण, बेमेल विवाह, संयुक्त परिवार की टूटन ये सब कुछ है।

गोबर तथा धनिया की विद्रोह चेतना ही होरी का प्रभाव भी है।

इन के अलावा एक समानान्तर शहरी कथा भी है। जिसमें राजनीति, मीडिया, सहकारी आदि है।

ग्रामीण कहानी में यथार्थवाद भारतीय किसान, ग्रामीण समाज का अपना यथार्थवाद है। इसे केवल मार्क्सवादी यथार्थवाद नहीं कहा जा सकता है।

मिल हड़ताल वाले प्रसंगों समाजवादी यथार्थवाद का प्रयोग दिखाया जा सकता है लेकिन उसमें अन्त में बेरोजगारी का जोर उस क्रान्ति को असफल का होना

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि
The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार गोदान में मार्क्सवादी समाजवादी यथार्थवाद से आधिक भारतीय ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था, किसानो तथा भारतीय समाज का यथार्थवाद आधिक है यद्यपि उस पर मार्क्स समाजवाद के प्रभाव को देखा जा सकता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) स्कंदगुप्त पर पारसी रंगमंच परंपरा के प्रभाव का विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जयशंकर प्रसाद का हिन्दी नाटकों में प्रवेश एक युगान्तकारी घटना है। वे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से प्रेरित रचनाकार थे जो तथ्य रूप में इसमें 'स्कंदगुप्त' नाटक में देखा जा सकता है। प्रसाद जी के रचनाकाल के समय पारसी थियेटर की धारा का प्रभाव था। इसका प्रभाव हम 'स्कंदगुप्त' भी देख सकते हैं।

पारसी रंगमंच में सामान्यतः धार्मिक व ऐतिहासिक प्रसंगों वाले नाटक खेले जाते थे। यह प्रभाव हम प्रसाद के 'स्कंदगुप्त' में भी देखते हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पारसी थियेटर में गाना और नृत्य एक आवश्यक और अनिवार्य तत्व था। यह प्रभाव हम 'स्कन्दगुप्त' नाटक में भी देख सकते हैं। लोगों को मनोरंजन प्रदान करने के लिए ऐसा अनिवार्य था।

पारसी रंगमंच में रंगमंचीय संकेतों, देश-काल-वातावरण इतना अधिक जोर नहीं था क्योंकि उद्देश्य मनोरंजन करना था।

प्रसाद जी भी मानते थे कि रंगमंच नाटक लेखन के अनुसार होना चाहिए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसीलिए कठिन दृश्यों की रचना कर देते थे। जबकि मोहन राकेश जैसे नाटककार नाटक को रंगमंच के अनुरूप लिखने पर जोर देते हैं।

इस प्रकार प्रसाद पर पारसी रंगमंच का प्रभाव तो दिखता है परन्तु वे उसका प्रयोग अपने अनुसार तथा अपनी मौलिक प्रतिभा के अनुरूप करते हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation